शुभाशंसा

वाणिज्य संकाय, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान द्वारा **"ग्लोबल साउथ और भारत"** शीर्षक से जनवरी-2025 'विशेषांक' निकल रहा है। इस अवसर पर उन शोधार्थियों-विद्वानों को शुभकामनाएं देता हूं, जिनके लेख इसमें संकलित हुए हैं।

मैं संपादक मंडल को विशेष धन्यवाद देना चाहूंगा, जिन्होंने इस विषय पर आलेखों का विशेषांक निकालने की योजना बनाई है। ग्लोबल साउथ के देश हाल के दिनों में अपनी प्रासंगिकता को सिद्ध कर रहे हैं। उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद के शिकार होने के कारण ये देश ग्लोबल नॉर्थ की अपेक्षा आर्थिक क्षेत्र में पिछड़े रहे हैं। हालांकि इन देशों का समाज, संस्कृति, भाषा और धर्म बहुत प्राचीन और समृद्ध रहा है। अपनी समृद्धता के कारण ही ये आक्रांताओं के शिकार रहे हैं।

वर्तमान विश्व नयी करवट ले रहा है। यह समय ग्लोबल साउथ के देशों का हैं। इनमें भारत अपनी भूमिका सिद्ध करने को तत्पर है। वर्तमान सदी भारत की रहने वाली है। ग्लोबल साउथ के देशों से भारत के संबंध प्राचीन समय में भी अच्छे रहे हैं और वर्तमान में भी वह उनकी आवाज बन रहा है। भारत ग्लोबल साउथ के देशों से अनेक संबंधों से जुड़ा है। ऐसे में आर्थिक क्षेत्र में भी उसकी प्रगति हो रही है। ग्लोबल साउथ के देशों से उसका व्यापार बढ़ता जा रहा है।

विद्वानों ने अपने आलेखों से इस संग्रह में विषय पर गंभीर चिंतन-मनन और मंथन किया है। सभी आलेख गंभीर और स्तरीय हैं। यह अंक ग्लोबल साउथ में भारत की बढ़ती भागीदारी के बारे में अध्ययन करने में सहायक सिद्ध होगा। इस अंक के प्रकाशन पर बहुत प्रसन्नता हो रही है।

अंत में एक बार फिर सभी विद्वानों को शुभकामनाएं देते हुए संपादक मंडल को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

शुभेच्छु

प्रो. बलवंत सिंह चौहान

प्राचार्य

संपादकीय

वैश्विक भविष्य की आवश्यकता बन रहा भारत

सन् 1980 के दशक में विली ब्रांट ने एक काल्पनिक रेखा 'ब्रांट लाइन' द्वारा विश्व को अमीर देशों अर्थात् मुख्यतः उत्तरी गोलार्द्ध में और गरीब देशों अर्थात् अधिकांशतः दक्षिणी गोलार्द्ध में विभाजित किया। यह कोई भौगोलिक रेखा नहीं है जो पूरे विश्व को दो भागों में बांटती हो। ये उत्तरी देशों और दक्षिणी देशों के बीच सामाजिक-आर्थिक विभाजन को दर्शाती है। इस रेखा के एक तरफ प्राचीन सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक परंपराएं, नीति नियम और न्याय है। दूसरी ओर भौतिकता, वैयक्तिकता, आधुनिकता, पूंजी और आय है। वस्तुतः यह रेखा न्याय और आय के बीच खींची है जो क्रमशः ग्लोबल साउथ और ग्लोबल नॉर्थ को विभाजित करती है।

ग्लोबल साउथ में ऐसे देश आते हैं, जिनके पास जनसंख्या अधिक है, वे धर्म, संस्कृति और सभ्यता के वाहक रहे हैं। पुरातनता, प्राचीनता उनकी पहचान हैं। ये देश उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद के शिकार रहे हैं। अब बाजारवाद इन देशों में अपना प्रसार बढ़ा रहा है।

दुनिया को प्रथम विश्व, द्वितीय विश्व और तृतीय विश्व के देशों में बांटकर देखा जाता रहा है। प्रथम, द्वितीय और तृतीय विश्व के देश शीतयुद्धकालीन अमेरिका, सोवियत संघ के सहायक देशों और गुट-निरपेक्ष देशों को संदर्भित करते हैं। प्रथम विश्व से तात्पर्य उन्नत पूँजीवादी राष्ट्रों से था, जिनमें संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, फ्राँस, जर्मनी आदि देश शामिल हैं। द्वितीय विश्व में सोवियत संघ के नेतृत्व वाले समाजवादी राष्ट्रों का उल्लेख था, इसके अन्तर्गत सोवियत संघ रूस, चीन, क्यूबा आदि आ जाते हैं। तृतीय विश्व में विकासशील देश हैं, जिनमें एशिया, अफ्रीका के देश जैसे भारत, इंडोनेशिया आदि मौजूद हैं।

शीत युद्ध के बाद साम्यवादी सोवियत संघ और कम्युनिस्ट देशों के पतन के बाद विश्व की राजनीति में परिवर्तन आया। थर्ड वर्ल्ड या तृतीय विश्व जैसी संज्ञाएं अप्रासंगिक हो गईं। विकासशील देशों के लिए 'ग्लोबल साउथ' शब्द अधिक उचित माना गया। 'ग्लोबल साउथ' शब्द का प्रयोग मोटे तौर पर उन देशों के संदर्भ में होना शुरू हुआ, जो औद्योगीकरण से बाहर रह गए थे और पूंजीवादी एवं साम्यवादी देशों के साथ विचारधारा का टकराव रखते थे, जिसने शीत युद्ध को जन्म दिया था।

'ग्लोबल साउथ' शब्द का प्रयोग पहली बार वर्ष 1969 में कार्ल ओग्लेसबी द्वारा किया गया था। 'ग्लोबल साउथ' शब्द भौगोलिक संदर्भ में नहीं है। दरअसल, ग्लोबल साउथ में शामिल दो सबसे बड़े देश चीन और भारत पूरी तरह से उत्तरी गोलार्द्ध में अवस्थित हैं। जापान, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया, न्यूजीलैंड आदि देश अपने भौगोलिक स्थान के बावजूद ग्लोबल नॉर्थ से जुड़े हैं। अतीत के थर्ड वर्ल्ड और वर्तमान समय के ग्लोबल साउथ के बीच एक पर्याप्त अंतर है। ग्लोबल साउथ में अब कुछ तेजी से विकासशील और उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएं भी शामिल हैं। आर्थिक वृद्धि और विकास में इन देशों के सामने आने वाली चुनौतियों को रेखांकित करने वाला यह विभाजन है।

वर्ष 1964 में 77 देशों का समूह (जी-77) अस्तित्व में आया, इसमें अब एशिया, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, कैरेबियन और ओशिनिया के 134 देश शामिल हैं। कभी इन्हें 'तीसरी दुनिया' के देश कहा गया। इन देशों को अपनी अर्थव्यवस्थाओं में सुधार एवं विस्तार के लिए अपनी नई भूमिका की तलाश थी। कोविड-19 महामारी, आर्थिक मंदी, रूस-यूक्रेन संघर्ष आदि कारकों का वैश्विक आर्थिक स्थितियों पर प्रभाव पड़ा। इसका विकासशील दुनिया पर तीव्र प्रभाव देखा गया, जिसने वैश्विक मामलों की परस्पर संबद्धता एवं अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में ग्लोबल साउथ के महत्त्व पर और अधिक ध्यान आकृष्ट किया। इन्हीं कारणों से हाल के दिनों में ग्लोबल साउथ ने अपना महत्त्व और प्रासंगिकता फिर से हासिल कर ली है। अब इंडोनेशिया, भारत, ब्राज़ील और दक्षिण अफ्रीका जैसे विकासशील देश निरंतर जी-20 शिखर सम्मेलनों की मेज़बानी कर रहे हैं। यह वैश्विक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में ग्लोबल

साउथ के मजबूत नेतृत्व तथा प्रभाव को इंगित करता है। ये देश विश्व की आबादी और अर्थव्यवस्थाओं के एक महत्त्वपूर्ण हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं। "वॉयस ऑफ द ग्लोबल साउथ" शिखर सम्मेलन ग्लोबल साउथ के देशों की आपसी प्रतिबद्धता और सामंजस्य को प्रदर्शित करता है। यह सम्मेलन पश्चिमी वर्चस्ववादी शक्तियों से अपने आप को अलग हटाकर देखने की एक कवायद है।

भारत के ग्लोबल साउथ देशों के साथ प्राचीन काल से ही घनिष्ठ संबंध रहे हैं। अंग्रेजी शासन के दौरान गिरमिटिया मजदूरों के रूप में भी इन देशों में अनेक भारतीय अपने धर्म और संस्कृति के साथ पहुंचे हैं। वर्तमान में भी ग्लोबल साउथ देशों के साथ भारत के संबंधों नया अध्याय शुरू हो रहा है। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इन देशों के साथ अपने संबंधों का नवीनीकरण करते हुए इन देशों की आवाज विश्व स्तर पर उठाने का प्रयास भी किया है। भारत के भू-राजनीतिक गणित में यह नेतृत्व करने का समय है। सबसे बड़े कार्यशील लोकतंत्र के रूप में भारत की प्रतिष्ठा, तेजी से बढ़ती और उभरती अर्थव्यवस्था, अत्यधिक कुशल कार्यबल, एक विकासशील भागीदार के रूप में उत्कृष्ट ट्रैक रिकॉर्ड है। इसके अलावा कई अन्य फैक्टर भी भारत को वंचित वैश्विक दक्षिण की आवाज बनने के मामले में दूसरों पर बढ़त दिलाते हैं।

भारत ने समझदारी से खुद को ग्लोबल साउथ के नेता के रूप में पेश करने से परहेज किया है और इसके बजाय अधिक स्वीकार्य वाक्यांश 'वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ' को चुना है। भारत के प्रधानमंत्री मोदी जी कहते हैं कि "भारत ग्लोबल साउथ के सभी देशों के साथ अपने अनुभव, अपनी क्षमताएं साझा करने के लिए प्रतिबद्ध है।"

भारत ने ग्लोबल साउथ के कई देशों को यूपीआई के साथ जोड़ने, मानवीय आपदाओं और संघर्षों में मानवीय मदद भेजने, गाजा और यूक्रेन जैसे संघर्षों में एक सकारात्मक भूमिका निभाने जैसे अनेक कार्य कर रहा है। इसके साथ भारत ने चीन के मॉडल का मुकाबला करने के लिए 'ग्लोबल डेवलपमेंट कॉम्पैक्ट" को तैयार गया है। जिसके द्वारा उन देशों के लिए आर्थिक सहायता दी जाती है जो देश चीन के द्वारा ऋण जाल में फंस जाते हैं।

ग्लोबल साउथ में भारत के प्रयासों को सफलता मिल भी रही है। वह चीन के दबदबे और प्रभाव को कम भी कर रहा है तथा ग्लोबल साउथ के देशों को चीन के कर्ज के जाल से बचा रहा है, वहीं भारत उसका विकल्प बन रहा है। इसके साथ ग्लोबल साउथ में भारत को एक बड़ा बाजार भी मिल रहा है। भारत के इन देशों के साथ व्यापारिक संबंध भी मजबूत हो रहे हैं। इसलिए भारत अमेरिका और चीन दोनों से समानांतर अपने संबंध कायम रखने में कामयाब हुआ है। यदि भारत ग्लोबल साउथ में अपनी भूमिका को सिद्ध करता है तो उसे आर्थिक लक्ष्यों के साथ सामरिक और कूटनीतिक लक्ष्यों की सहज ही प्राप्ति हो सकती है।

ग्लोबल साउथ देशों में भारत की सक्रियता न केवल भारत की दृष्टि से लाभदायक है बल्कि वैश्विक दृष्टि से भी उतनी ही फायदेमंद है। भारत पश्चिमी बाजारवाद को ग्लोबल देशों में रोक सकता है। इससे उनके आर्थिक शोषण पर लगाम लगेगी। भारत चीन को काउंटर कर ग्लोबल साउथ देशों का भला कर सकता है। भारत यदि विश्व राजनीति में आगे बढ़ता है तो वैश्विक शक्ति संतुलन को बनाए रखने में भी यह उपयोगी कदम साबित होगा। निरंतर देशों के बीच होते संघर्षों को भारत ही रोक सकता है। अतः यह विकासशील देशों के विभिन्न क्षेत्रों और समूहों के अनुरूप सक्रिय भारतीय भूमिका की आवश्यकता तो है ही, भारत के लिए भी ग्लोबल साउथ में अग्रणी बनने के लिए यह उपयुक्त अवसर है।

"*ग्लोबल साउथ और भारत*" संग्रह में आए सभी आलेख इस विषय को समझने में सहायक सिद्ध होंगे। इस संग्रह में सभी विद्वानों ने विभिन्न संदर्भों में भारत की भूमिका को स्पष्ट किया है। ग्लोबल साउथ में मानवाधिकारों की स्थिति, हिंदी साहित्य की स्थिति, भारतीय भाषाओं का विकास, भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ता प्रभाव, कूटनीतिक-सामरिक संबंध, बदलता नया शक्ति संतुलन, भारत का नेतृत्व वाला अवतार आदि विषयों पर यहां चिंतन हुआ है। यह विषय बहुत सामयिक है। विद्यार्थियों, शोधार्थियों, जिज्ञासुओं, शिक्षकों और विद्वानों के लिए यह विशेषांक अपनी सार्थकता रखेगा। इसके प्रकाशन पर संपादक मंडल की तरफ से सबको शुभकामनाएं देता हूं।

शिवास्ते पन्थानः !

हिताकांक्षी

डॉ. गोपीराम शर्मा

सम्पादक

INDEX

Sr. No	Title	Page No
1	भारत और वैश्विक दक्षिण - **प्रो. मैना निर्वाण**	1-4
2	ग्लोबल साउथ देशों में हिन्दी गिरमिटिया साहित्य का प्रसार और प्रभाव का अध्ययन - **डॉ. गोपीराम शर्मा**	5-7
3	ग्लोबल संस्कृति व ग्लोबल साहित्य - **प्रो. बबीता काजल**	8-9
4	ग्लोबल साउथ में भारत की बढ़ती भागीदारी से अर्थव्यवस्था पर प्रभाव - **डॉ. अखिलानंद पाठक**	10-11
5	भारत की ग्लोबल साउथ में बढ़ती साझेदारी का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव - **डॉ. शकुंतला देवी राणा**	12-13
6	ग्लोबल साउथ के साथ भारत का रणनीतिक आर्थिक सहयोग: विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए लाभ - **राम सिंह**	14-16
7	ग्लोबल साउथ देशों के साथ भारत के आर्थिक संबंधों की समीक्षाः एक अध्ययन - **डॉ. मधु सूदन प्रधान, डॉ. लाल चन्द चाहर**	17-22
8	ग्लोबल साउथ में भारत की बढ़ती भागीदारी से अर्थव्यवस्था पर प्रभाव - **राजेन्द्र कुमार**	23-25
9	वैश्विक दक्षिण में भारत की बढ़ती भूमिका पर अर्थव्यवस्था का प्रभाव - **डॉ. पारस जैन, मोनिका सोनी**	26-29
10	ग्लोबल साउथ और भारत : अर्थव्यवस्था पर पड़ता प्रभाव - **डॉ. भूपेन्द्र कुमार महेन्द्रा, डॉ. कुशाग्र सिंह नेगी**	30-31
11	ग्लोबल साउथ में भारत की भूमिका - **डॉ. यादव सिंह**	32-34
12	ग्लोबल साउथ में वर्तमान भारत की भूमिका एवं कार्य - **रवि कुमार**	35-37
13	ग्लोबल साउथ में भारत के कदम: एक नए बाजार की तलाश - **जगदीश राय**	38-39
14	ग्लोबल साउथ में भारत का उभरता हुआ नेतृत्व - **डॉ. सुशीला देवी यादव**	40-42
15	जी20, ब्रिक्स और ग्लोबल साउथ के नेतृत्व की दौड़ में भारत की भूमिकाः एक समग्र अध्ययन - **डॉ. शिवा बंसल**	43-44
16	ग्लोबल साउथ के प्रशासन में भारत की भूमिका - **डॉ. अमित कुमार**	45-46
17	दक्षिण-दक्षिण सहयोग की अवधारणा एवं समकालीन दौर में भूमिकाः चुनौतियाँ एवं समाधान - **डॉ. संजीव कुमार बंसल**	47-49

18	ग्लोबल साउथ का वैश्विक एकता पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव - **डॉ. राजेश**	**50-51**
19	ग्लोबल साउथ के देशों में मानवाधिकारों की स्थिति एवं चुनौतियाँ - **डॉ. रसीला**	**52-54**
20	श्रीलंका से भारत के ऐतिहासिक संबंध - **जगत नारायण**	**55-56**
21	प्राचीन भारत के अफगानिस्तान के साथ संबंध - **सुभाष चन्द्र**	**57-58**
22	ग्लोबल साउथ में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव - **आशीष गोदारा**	**59-61**
23	ग्लोबल साउथ देशों में ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का विकासः एक भौगोलिक अध्ययन - **डॉ. राहुल**	**62-63**
24	ग्लोबल साउथ में शांति, सुरक्षा और विकास की कड़ी में भारतीय महिलाओं की भूमिका: एक राजनीतिक सर्वेक्षण - **नेकीराम, डॉ. पूजा रानी**	**64-67**
25	महिला एवं बाल कल्याण: भारत एवं ग्लोबल साउथ के देशों में प्रयास - **मनीषा**	**68-70**
26	भूमंडलीकरण और स्त्री विमर्श - **इंद्रा जैफ, डॉ. मीनाक्षी चौधरी**	**71-72**
27	भारतीय भाषाओं की विश्व यात्रा के परिप्रेक्ष्य में गिरमिटिया साहित्य और ग्लोबल साउथ संघ - **गीतांजली कोलीवाल**	**73-75**
28	हिन्दी सिनेमा और दक्षिण विश्व के देश: साहित्य, समाज और संस्कृति का प्रभाव - **डॉ. उमेश कुमार**	**76-78**
29	भारतीय संस्कृति, कला और समाज पर ग्लोबल साउथ संघ का असर: अनामिका के काव्य के संदर्भ में - **वर्षा कुमारी यादव, डॉ. मधु वर्मा**	**79**
30	भारत-चीन सीमा विवाद और तिब्बत की स्थिति का सामरिक मूल्यांकन - **डॉ. सुमेश कुमार**	**80-82**
31	भारत में घरेलू उत्पाद खरीदते समय विभिन्न उपभोक्ता दृष्टिकोण - **विकास तिवाड़ी**	**83-85**
32	राजस्थान में खाद्य सुरक्षाः एक आर्थिक अध्ययन - **डॉ. पारस जैन, किरण जोशी**	**86-89**
33	ऋण माफी का कृषि साख और बैंकों की गैर निष्पादित संपत्ति पर प्रभाव - **ओम प्रकाश**	**90-92**
34	GLOBAL SOUTH: CHALLENGES AND CRITICISM - **PROF. PUSHPENDER KUMAR**	**93-94**
35	DEVELOPED INDIA AND WETLAND CONSERVATION: A CRITICAL EXPLORATION - **DR. SURENDER KUMAR**	**95-97**

36	THE USE OF COMPUTERS IN EDUCATION IN THE GLOBAL SOUTH - **DR. MAHENDER KUMAR**	**98-99**
37	THE GLOBAL SOUTH AND INDIAN PHYSICAL EDUCATION SCENARIO - **DR. SUKHJEET SINGH, DR. BHAWANI SINGH**	**100-102**